RESEARCHERID THOMSON REUTERS

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ग्रामीण स्तर पर प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Rajesh Kumar, Assistant Registrar,

Shri Vishwakarma Skill University Palwal Haryana

भूमिका :—

भारतीय चिन्तन परम्परा में सृष्टि के विकास के आरम्भ से ही ''तमसो मां ज्योतिर्गमय'' की अवधारणा प्रधान रही है। अर्थात् शिक्षण प्रकाश का स्त्रोत है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सच्चे मार्ग का प्रदर्शन करता है। शिक्षा से विनय व शील का विकास होता है। ''सा विद्या या विमुक्तये'' से तात्पर्य यह है कि विद्या से मुक्ति मिलती है। मुक्ति का अर्थ केवल आवागमन से मुक्त होना ही नहीं बल्कि जड़ता, अंहकार तथा मानसिक दासता से उठकर व्यक्ति को चैतन्य, विजयी तथा स्वतंत्र विचारक बनाने से है।

शिक्षा किसी भी आधुनिक समय, उन्नति और विकसित कहे जाने वाले समाज का अनिवार्य अंग है। एक शिक्षित व्यक्ति, शिक्षित समाज या शिक्षित राष्ट्र की प्रगति के दुर्गम पथ पर अनवरत यात्रा कर पाने में समर्थ होता है। शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता है। उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं विकास में परिवर्तन किया जाता है। शिक्षा ही मानव जीवन को सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाती है। शिक्षा की प्रक्रिया जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है।

प्राथमिक शिक्षा का अर्थ :—

प्राथमिक शिक्षा जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि शिक्षा की प्रथम अवस्था है। यह भारत में शिक्षा प्रणाली की प्रथम सीढ़ी है। यह वह अवस्था है जो बालक की भविष्य की शिक्षा की बुनियाद है। प्राथमिक शिक्षा ही बच्चे का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावात्मक योग्याताओं का विकास करके बालक के भविष्य की शिक्षा का आधार प्रदान करती है।

भारत में माध्यमिक शिक्षा —

कक्षा 6 से 12वीं कक्षा तक (3+2+2) वर्षीय अवधि की अवर माध्यमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक कक्षाएं प्रचलित माध्यमिक कक्षाएं है। 3 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम की पूरक माध्यमिक कक्षा अथवा बुनियादी कक्षाएं 6 से 11 कक्षा तक 3 + 3 वषीय अवधि की अवर माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक कक्षाएं चलाने के प्रयास हो रहे है।

प्राथमिक कक्षा (1से 4 या 5) के पश्चात् उच्च प्राथमिक शिक्षा कक्षा (6 से 8) की व्यवस्था है। इसके पश्चात् माध्यमिक शिक्षा की व्यवस्था है। माध्यमिक हाई स्कूल में कक्षा 6 से 10 तक की व्यवस्था है।

सरकार गांव में अनपढ़ माता–पिता को ज्ञान देने व उनको शिक्षा के महत्व से परिचित करवाने के लिए व्यस्क शिक्षा पर काफी बल दे रही हैं। बहुत से ऐसे बच्चे हैं जिनके माता–पिता गरीबी व बेरोजगारी के कारण बच्चों को शिक्षा नहीं दे पाते, इस तरह के गरीब बच्चों के लिए सरकार ने अनेक तरह की आर्थिक सहायता जैसेः निःशुल्क शिक्षा, दोपहर का भोजन, मुफ्त पुस्तकें, मुफ्त वर्दियां तथा कई प्रकार की छात्रवृतियां प्रदान की जा रही है। इन सब तरह की सुविधाओं के बाद भी प्राथमिक शिक्षा के लक्ष्य को पूरा नहीं किया जा सका। प्राथमिक शिक्षा के इस स्तर के लिए अध्यापकों को होने वाली समस्याऐं भी है। अध्यापकों को भी विद्यालय व घर में अनेक तरह की समस्याओं को सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं का अध्यापकों की शैक्षिक प्रशासकीय तथा व्यक्तिगत समस्याओं के कारण से प्राथमिक स्कूलों में शिक्षा का स्तर बहुत उपर नहीं उठ सका। प्राथमिक स्कूलों में शैक्षिक, प्रशासकीय तथा व्यक्तिगत समस्याएं अध्यापकों के लिए तथा शिक्षा के लिए गंभीर समस्याएं हैं।

अध्ययन की आवश्यकता –

वर्तमान समय में ग्रामीण स्तर पर प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण कार्य के दौरान अध्यापकों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे – विद्यालयों की विभिन्नता, शिक्षकों के वेतनमान में शहरों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में भिन्नता, अध्यापकों को चिकित्सा सुविधा व अन्य भतों का अभाव और अध्यापकों को समय पर वेतन न मिलना, अपने विषय के अतिरिक्त अन्य विषयों का अध्यापन कार्य करना। शैक्षिक अधिकारियों का बार–बार निरीक्षण, पैंशन तथा ग्रैजुएटी का न होना। पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की भिन्नता विज्ञान, गणित व अन्य विषयों को पढ़ाने के लिए सहायक सामग्री का न होना, आने–जाने की सुविधाओं का अभाव, बिजली पानी जैसी मुलभूत सुविधाओं का अभाव आदि के कारण इन अध्यापकों में असंतोष पैदा करती है। इनसे अलग भी अध्यापकों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिसमें मुख्य रूप से शैक्षिक, प्रशासकीय और व्यक्तिगत समस्याएं बहुत महत्व रखती हैं। इन सब कारणों को जानने के लिए शोधकर्ता ने इस विषय का चुनाव शोध के लिए किया।

शोध समस्या का कथन –

''ग्रामीण स्तर पर प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन।''

समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण –

1. ग्रामीण क्षेत्र – ऐसे लोग जिनका निवास, रहन–सहन तथा व्यवसाय गांव में ही होता है वे लोग ग्रामीण कहे जाते है और वह क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्र कहलाता है।

2. प्राथमिक शिक्षा – पूर्व प्राथमिक शिक्षा के बाद की शिक्षा ही प्राथमिक शिक्षा कहलाती है। प्राथमिक शिक्षा वह शिक्षा हैं जो बालक को प्रारम्भ में ही दी जाती हैं जिससे वह अपनी शिक्षा की शुरूआत करता है।

3. माध्यमिक शिक्षा – प्राथमिक शिक्षा पूरी होने के बाद दी जाने वाली शिक्षा मध्यमिक शिक्षा कहलाती है। इस प्रकार की शिक्षा 11 से 17 वर्ष के बच्चों को दी जाती है।

4. अध्यापक – बालकों को शिक्षा प्रदान करने वाले व जीवन को नई दिशा प्रदान करने वाले व्यक्ति को अध्यापक कहते हैं।

5. शिक्षण कार्य – औपचारिक शिक्षा पद्धति में अध्यापक द्वारा दिया जाने वाला शिक्षण ही शिक्षण कार्य कहलाता है।

6. समस्या – छात्रों व अध्यापकों को शिक्षण कार्यों में आने वाली बाधा को समस्या कहते हैं।

शोध के उद्देश्य –

1. ग्रामीण स्तर पर प्राथमिक विद्यालयों में महिला शिक्षकों को शिक्षण कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं का अध्ययन।
2. ग्रामीण स्तर पर प्राथमिक विद्यालयों में पुरूष शिक्षकों को शिक्षण कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं का अध्ययन।
3. ग्रामीण स्तर पर माध्यमिक विद्यालयों में महिला शिक्षकों को शिक्षण कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं का अध्ययन।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

4. ग्रामीण स्तर पर माध्यमिक विद्यालयों में पुरूष शिक्षकों को शिक्षण कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं का अध्ययन।

5. ग्रामीण स्तर पर प्राथमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों एवं माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों का शिक्षण कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन।

6. ग्रामीण स्तर पर प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं माध्यमिक स्तर के पुरूष शिक्षकों का शिक्षण कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएं –

1. ग्रामीण स्तर पर प्राथमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों एवं माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों को शिक्षण कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ?

2. ग्रामीण स्तर पर प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं माध्यमिक स्तर के पुरूष शिक्षकों को शिक्षण कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ?

अध्ययन की परिसीमाएं –

1. प्रस्तुत शोध कार्य फतेहाबाद जिले के जाखल ब्लॉक के गांवो तक ही सीमित रखा गया है।

2. प्रस्तुत शोध कार्य में जाखल ब्लॉक के गावों के सरकारी एवं निजी विद्यालयों को ही लिया गया है।

3. प्रस्तुत शोध कार्य में जाखल ब्लॉक के गावं के प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की केवल व्यक्तिगत, प्रशासकीय और शैक्षिक समस्याओं को ही लिया गया है।

अनुसंधान विधि :–

प्रस्तुत अनुसंधान शोध कार्यो में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। शैक्षिक शोध के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का आम प्रयोग होता है। इसे मानवीय सर्वेक्षण के नाम से भी पुकारा जाता है।

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

अध्ययन में प्रयुक्त जनसंख्या :–

प्रस्तुत शोध शोध कार्य में जाखल ब्लॉक के 10 प्राथमिक विद्यालय, 10 माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है। इस अध्ययन में 100 अध्यापकों को लिया गया है, 50 अध्यापक प्राथमिक एंव 50 अध्यापक माध्यमिक विद्यालयों से हैं।

न्यादर्श :–

शोध कार्य में शोधकर्ता ने उद्देश्य पूर्ण प्रतिचयन विधि का प्रयोग करते हुए जाखल क्षेत्र के 10 प्राथमिक विद्यालय व 10 माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों को का चयन किया है। उद्देश्य पूर्ण प्रतिचयन द्वारा चयन किए गए 50 अध्यापक प्राथमिक एंव माध्यमिक विद्यालयों के 50 अध्यापकों को शोध कार्य में शामिल किया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त अभिकल्प :–

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययनकर्ता द्वारा स्थाई द्वि समूह तुलनात्मक अभिकल्प का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार के अभिकल्प में द्वि–स्थाई तुलनात्मक समूह अभिकल्प के भी गुण होते है। इस प्रकार के अभिकल्प में दो स्थिर या स्थायी प्रकार के समूहों को पहले अध्ययन के लिये चुन लिया जाता है। इन समूहों को समतुल्य बनाने का प्रयास अध्ययनकर्ता नहीं करता। समूहों को चुन लेने के बाद वह दोनो समूहों के प्रायोगिक उपचार से पहले वह दोनो समूहों के निष्पादन का मापन करता है अथवा पूर्व परीक्षण करता है। फिर प्रायोगिक उपचार देता है और पुनः परीक्षण करता है अथवा प्रायोगिक उपचार के बाद निष्पादन का मापन करता है। दो स्थितियों में प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जांच टी परीक्षण के द्वारा करता है।

अध्ययन में प्रयुक्त प्रश्नावली :–

जाखल ब्लॉक के प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन मापने के लिए मानकीकृत प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

प्रस्तुत शोध में 'एस.पी. आहलुवालिया' रिटायर्ड प्रो0 एण्ड हैड डिपार्टमैंट ऑफ एजुकेशन डॉ0 एच0एस0 गौड युनिवर्सिटी सागर (एम0पी0) द्वारा निर्मित ज्मंबीमत ।जजपजनकम प्दअमदजवतल ज्मेज का प्रयोग उपकरण के रूप में किया गया है।

RESEARCHERID THOMSON REUTERS

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय पद्धतियाँ :–

आंकड़ो के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय पद्धतियों का विशेष महत्व है। अतः अध्ययन में निम्न प्रकार की सांख्यिकीय पद्धति का प्रयोग किया गया है।

(क) माध्य (डमंद) :–

उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों का नैतिक स्तर, मूल्य विकास, शैक्षणिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा को जानने के लिये प्रश्नावली के माध्यम ये प्राप्तांको का माध्य ज्ञात किया गया। माध्य समको के सारे मूल्यों के योग को मूल्यों की कुल संख्या से भाग देकर प्राप्त किया जाता है।

माध्य = $M = \frac{\sum X}{N}$

ड त्र माध्य योग

Σ त्र योग वितरण में समक

X त्र वितरण में समक

N त्र समकों की संख्या

(ख) मानक विचलन (ैजंदकंतक कमअपंजपवद):–

विद्यार्थियों के प्राप्तांको का उनके औसत मान से विचलन देखने के लिए मानक विचलन निकाला जाता है। मानक विचलन को औसत विचलन का वर्गमूल भी कहा जाता है। यह वितरण के औसत से सब विचलनों के वर्गो के वर्गमूल का औसत है। प्रतिदर्श का मानक विचलन

$$SD = \sigma = \frac{\sqrt{\sum d^2}}{N} \quad \sqrt{\sum d^2}$$

σ त्र प्रतिदर्श का मानक विचलन

क त्र यथा प्राप्त आंकड़ो का मध्य बिन्दु से विचलन

छ त्र मापों की संख्या

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

$\sqrt{\sum d^2}$ त्र प्राप्त संख्या का धनात्मक वर्गमूल

(ख) टी टैस्ट (ज्.ज्मेज):–

दो समूहों की तुलना करने के लिये टी–टैस्ट लगाया गया है।

$$\text{T-Test} = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2 + \sigma_2^2}{N1 + N2}}}$$

$ड_1$ त्र मध्यमान पहले ग्रुप का

$ड_2$ त्र मध्यमान दूसरे ग्रुप का

σ_1 त्र प्रमाणिक विचलन पहले ग्रुप का

σ_2 त्र प्रमाणिक विचलन दूसरे ग्रुप का

$छ_1$ त्र पहले ग्रुप के आंकड़ो की संख्या

$छ_2$ त्र दूसरे ग्रुप के आंकड़ो की संख्या

अनुसंधान के परिणाम :–

1. प्राथमिकता विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों को शिक्षण कार्य में आने वाली समस्याओं के अध्ययन में पाया गया है कि प्राथमिक विद्यालयों के 25 पुरूष शिक्षको को लिया गया है। जिनमें से पुरूष शिक्षकों का औसत मान 43.88 है। तथा प्रमाणिक विचलन 14.66 है। तथा प्रतिशत 50% है।

2. प्राथमिकता विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों को शिक्षण कार्य में आने वाली समस्याओं के अध्ययन में पाया गया है कि प्राथमिक विद्यालयों के 25 पुरूष शिक्षको को लिया गया है। जिनमें से पुरूष शिक्षकों का औसत मान 43.88 है। तथा प्रमाणिक विचलन 14.66 है। तथा प्रतिशत 50% है।

3. माध्यमिक विद्यालयों के महिला शिक्षकों को शिक्षण कार्य में आने वाली समस्याओं के अध्ययन में पाया गया है कि माध्यमिक विद्यालयों के 25 महिला शिक्षको को लिया गया है। जिनमें से महिला शिक्षकों का औसत मान 30.44 है। तथा प्रमाणिक विचलन 15.92 है। तथा प्रतिशत 48% है।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

4. माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों को शिक्षण कार्य में आने वाली समस्याओं के अध्ययन में पाया गया है कि माध्यमिक विद्यालयों के 25 पुरूष शिक्षको को लिया गया है। जिनमें से पुरूष शिक्षकों का औसत मान 45.64 है। तथा प्रमाणिक विचलन 19.56 है। तथा प्रतिशत 51% है।

5. प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों की महिला शिक्षको को शिक्षण कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि प्राथमिक विद्यालय की महिला शिक्षको व माध्यमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों को शिक्षण कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। टी का प्राप्त मान– 'टी' तालिका के मान से कम है तो दोनों ग्रुपों में सार्थक अन्तर नहीं है। शून्य परिकल्पना स्वीकार होती है।

6. प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षको को शिक्षण कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि प्राथमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षको व माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों को शिक्षण कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं में सार्थक अन्तर है। टी का प्राप्त मान– 'टी' तालिका के मान से अधिक है तो दोनों ग्रुपों में सार्थक अन्तर है। शून्य परिकल्पना अस्वीकार होती है।

अध्ययन के निष्कर्ष :–

प्राथमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों को शिक्षण कार्य में आने वाली समस्याओं के अध्ययन में पाया गया है कि प्राथमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों को शिक्षण कार्य में आने वाली समस्याएं उच्च स्तर की है। प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों को शिक्षण कार्य में आने वाली समस्याओं के अध्ययन में पाया गया है कि प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों को शिक्षण कार्य में आने वाली समस्याएं उच्च स्तर की है। माध्यमिक विद्यालयों के महिला शिक्षकों को शिक्षण कार्य में आने वाली समस्याओं के अध्ययन में पाया गया है कि माध्यमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों को शिक्षण कार्य में आने वाली समस्याएं उच्च स्तर की है। माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों को शिक्षण कार्य में आने वाली समस्याओं के अध्ययन में पाया गया है कि माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों को शिक्षण कार्य में आने वाली समस्याएं उच्च स्तर की है। प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों को शिक्षण कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि प्राथमिक एंव माध्यमिक विद्यालयों की महिला शिक्षको के शिक्षण कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षको को शिक्षण कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि प्राथमिक एंव माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षको को शिक्षण कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

शैक्षिक निहितार्थ :–

1. अध्यापकों की समस्याओं के निदान के लिए प्रशासन को उचित कदम उठाने चाहिए जिससे अध्यापक सन्तुष्ट रहें।

2. अध्यापकों को उदासीन नहीं होना चाहिए। उन्हें अपने अन्दर आत्म विश्वास पैदा करना चाहिए।

3. अध्यापक राष्ट्र समाज के निर्माता है इसलिए राष्ट्र व समाज को चाहिए कि वे अध्यापकों का आदर व सम्मान करें। उनके द्वारा किए गए कार्यो की प्रशन्सा और समाजिक प्रतिष्ठा प्रदान करें।

4. अध्यापकों को आपस में मिलजुल कर रहना चाहिए और एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए।

5. अध्यापकों को शैक्षिक सुधार हेतु ग्रामीण सीमति और पंचायत से भी सहायता मिलती रहनी चाहिए।

6. अध्यापकों को विद्यालयों में संसाधनों सम्बन्धी सभी आधुनिक सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए। उन्हें विद्यालय में पुस्तकालय, दृष्य–श्रव्य सामग्री, स्टॉफ रूम, बिजली, पानी आदि की व्यवस्था प्रदान करनी चाहिए।

7. सरकार को चाहिए कि अध्यापकों को वेतन समय पर देना चाहिए तथा वार्षिक वेतन वृद्धि भी प्रदान की जानी चाहिए।

8. विद्यार्थियों के माता–पिता को भी उनकी समस्याओं के निवारण में सहयोग देना चाहिए।

9. अध्यापकों को चाहिए कि वे अपना धैर्य और सहनशीलता बनाए रखे।

10. अध्यापकों को एक ही समय में अधिक कक्षाओं को पढ़ाने के लिए बाध्य नहीं किया जाना चाहिए।

भावी शोध के लिए सुझाव –

1. हरियाणा राज्य के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यक्तिगत, प्रशासनिक एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

2. केन्द्रीय प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यक्तिगत, प्रशासनिक एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

3. हरियाणा राज्य के प्राईवेट प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यक्तिगत, प्रशासनिक एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

4. नवोदय विद्यालयों के अध्यापकों की व्यक्तिगत, प्रशासनिक एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

5. माध्यमिक स्तर व उच्च स्तर के अध्यापकों की व्यक्तिगत, प्रशासनिक एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

6. प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र विस्तृत करके किन्ही दो राज्यों में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।